रपट - मार्च 2023 जैविक कृषि भ्रमण, हरियाणा
पहले दूर से पता चल जाता था कि यह जैविक खेत है, अब पूछना पड़ता है: इतने अच्छे हैं जैविक खेत
क़ुदरती खेती में किसान एक दूसरे से सीख कर ही आगे बढ़ते
हैं. इस लिए क़ुदरती खेती अभियान हरियाणा के जैविक खेतों का भ्रमण समय समय पर आयोजित करता रहा है. हाल में 11-12 मार्च 2023 को ऐसा ही जैविक कृषि भ्रमण आयोजित किया गया था. झज्जर, दादरी, हिसार, जींद इत्यादि जिलों में बीस के करीब खेत दौरे लायक पाए गए थे परन्तु 12 खेतों का कार्यक्रम ही दो दिन में समेटा जा सकता था. इन 12 खेतों में से एक खेत अंतिम समय में किसान की व्यस्तता के कारण छोड़ना पड़ा परन्तु मौके पर एक और खेत जुड़ गया. चुने हुए खेतों में तीन खेत तो पहले भी भ्रमण हेतु चुने गए थे, शेष खेत पहली बारी भ्रमण हेतु चुने गए थे. जुड़ते-कटते कुल 15 किसानों ने दौरा शुरू किया. तीन और लोग बीच में जुड़े परन्तु 5 लोगों ने अपरिहार्य कारणों से बीच में दौरा छोड़ भी दिया एक व्यक्ति तो छोड़ कर गया एवं फिर दूसरे दिन पहुँच भी गया. इतनी रूचि थी किसानों में. 15 किसानों में 5 तो कार्यकारिणी के सदस्य थे, एक पुराना किसान था; शेष नए थे जिन में से 2 फ़िलहाल जैविक खेती नहीं करते. घरों में खाया जैविक खाना सब को बेहद पसंद आया. पहले पहल जहाँ दूर से देख के ही पता चल जाता था कि यह जैविक खेत है (क्योंकि फसल काफी कमज़ोर होती थी), अब पूछना पड़ता है कि जैविक कौन सा है (क्योंकि जैविक फसल पड़ोस के रासायनिक खेत से किसी मामले में कम नहीं लगती); इतनी बढ़िया फसलें आम तौर पर खड़ी थी.
निश्चित तौर पर बढ़िया खेत ही चुने गए थे. यानी कि अभी भी कमज़ोर फसल वाले जैविक खेत भी हैं, बल्कि इन खेतों पर भी किसी किसी खेत में फसल कमज़ोर भी थी. परन्तु इस से यह तो साबित होता ही है कि जैविक का अर्थ कमज़ोर फसल नहीं होता. यह भी साबित होता है कि अगर सब उपाय अपनाए जायें तो क़ुदरती खेती में फसल रासायनिक से बेहतर भी हो सकती है.
इस दौरे से क़ुदरती खेती अभियान से पहले से जुड़े सक्रिय किसानों का आत्मविश्वास भी बढ़ा. उन्हें महसूस हुआ कि कुछ गिने चुने किसान ही अच्छी फसल नहीं ले रहे बल्कि कई अनजान किसान भी ऐसी अच्छी फसल ले रहे हैं एवं ऐसे किसानों की संख्या बढ़ रही है. भ्रमण में शामिल वो किसान जो अब तक रासायनिक खेती ही कर रहे हैं या क़ुदरती खेती अभियान से सक्रिय रूप से नहीं जुड़े हुए, वे बिना रसायनों के इतनी अच्छी फसल देख कर आश्चर्यचकित थे. पहली बार अभियान के कार्यक्रम में शामिल फतेहाबाद के श्री सुनील ने कहा कि “प्रथम बार रासायनिक खेती से भी अच्छी फसल देखने को मिली”.
इन खेतों के कुछ फोटों संलग्न हैं. ये फोटो निम्न लिंक पर
भी उपलब्ध हैं: https://archive.org/details/march-2023-organic-

farm-visit-haryana हर फोटो फाइल के नाम से पता चल जाएगा कि किस किसान के खेत का फोटो है. जिन साथियों की ज़िम्मेदारी फ़ोटो खींचने एवं वीडियो बनाने की लगी थी, उन्हें किन्हीं कारणों से भ्रमण बीच में छोड़ कर जाना पड़ा, कुछ जगह शाम होने से फोटो नहीं हो पाए, तो कहीं के फ़ोटो ठीक से खींचे नहीं गए, या कम खींचे गए. इस लिए सब किसानों के फ़ोटो की संख्या समान नहीं है परन्तु इस का अर्थ यह कदापि नहीं है कि जिन खेतों के फोटो कम हैं, वे अच्छे नहीं थे. संलग्न फोटों में यह प्रयास किया गया है कि एक किसान की एक फसल का एक से ज़्यादा फोटो न हो.
आधे से अधिक किसानों के परिवार खेत में ही रहते हैं अथवा खेत के काम में भाग लेते हैं. अगर परिवार के लोग खेत में काम नहीं करते तो श्रमिकों का होना ज़रूरी है. ‘बिना कुछ किये’ क़ुदरती खेती नहीं हो सकती हालाँकि बिना देसी गाय के भी अच्छे खेत खड़े थे. अच्छी फसल वाले किसान पशु खाद की पर्याप्त मात्रा का प्रयोग कर रहे थे अथवा बाहर से खरीद कर भी कृषि अवशेष का भरपूर प्रयोग कर रहे थे. ज़्यादातर किसान गोबर की खाद को सुधार कर प्रयोग कर रहे थे परन्तु शुरू से ही गोबर को सही तरीके से तैयार नहीं कर रहे थे, बाद में जीवामृत या डी कम्पोज़र का प्रयोग कर के सुधार रहे थे. इस से कुछ पोषक तत्व तो बिना प्रयोग के नष्ट हो ही जाते हैं. एक किसान ही शुरू से बहुत अच्छे से, कुरडी को ढक कर खाद तैयार कर रहे थे और उन का खेत बहुत अच्छा था. लगभग आधे किसान मिश्रित खेती कर रहे थे, तो शेष अभी भी अकेली गेहूं बो रहे थे. दुर्भाग्य से ये किसान अब भी अकेले गेहूं बोने को सही भी बता रहे थे, अब भी कह रहे थे कि मिश्रित खेती संभव नहीं है, जब कि दूसरे खेतों में हम ने गेहूं में मेथी तक खडी देखी थी. उस किसान ने बताया कि उन के ग्राहक मेथी मिश्रित गेहूं ज़्यादा पसंद करते हैं. सरसों की खेती करने वाले किसान सरसों की खली का भी खाद के तौर पर प्रयोग कर रहे हैं (या तो गोबर की खाद में मिला कर या पानी के साथ). एक ही किसान के एक किल्ले में खूब जैव विविधता थी और दूसरे किले में एक फसली खेती थी. पूरे खेत की जैव विविधता बढ़ाने से और भी अच्छे परिणाम मिलेंगे. क़ुदरती खाद को सुधारना और नियमित प्रयोग करना अच्छी पैदावार लेना ज़रूरी है और पूरा देश भी जैविक खेती करने लग जाए तो भी पर्याप्त गोबर की खाद उपलब्ध हो सकती है बशर्ते कि गोबर नालियों में न बहे एवं इस का सही तरीके से प्रयोग किया जाए. जब जब रासायनिक खेती में खाद डाली जाती है, तब तब क़ुदरती खेती में भी खुराक देनी चाहिए (इस के तरीके पुस्तिका में दिए गए हैं). गेहूं की अच्छी फसल लेने के लिए खेत को साढू छोड़ना ज़रूरी नहीं है. देसी कपास के बाद वाली गेहूं साढू छोड़े खेत से भी बेहतर खड़ी थी.
दो जगह जैविक खेतों पर पड़ोसी रासायनिक खेती करने वाले किसान भी जलपान वितरण में सहायता कर रहे थे. परन्तु 2-3 किले

वाले ये किसान भी यह कह रहे थे कि हम इतनी मेहनत नहीं कर सकते. निश्चित तौर पर जो किसान खेत में काम नहीं कर सकता, उसे तो महंगी एवं कर्जे वाली खेती करनी होगी और ज़हरीला भोजन खाना ही पड़ेगा.
जिन किसानों के खेतों का दौरा किया गया उन के नाम निम्न
हैं: श्री वेद प्रकाश कोयलपुर, झज्जर 9812384202, श्री सतबीर सिंह निमली 8059439149, 7015484627, श्री भीम सिंह सेह्लंगा, 9812177231, 9812531748, श्री जय भगवान् दगडोली 9813420753, श्री राज कुमार, लाड, 9813298260; 9588737070, श्री उमराव सिंह लाड 9992736634, श्री महेंद्र कुमार साबू बहल, 8222092111, श्री सूरजभान, गारनपुरा, नरेश कुमार, डाया 9416993559, श्री धर्मपाल, उमरा, 9991068080 एवं श्री राजेन्द कुमार रामायण 9812775000.
भ्रमण में शामिल किसानों के संपर्क सूत्र निम्न हैं.
श्री तेज सिंह 9812705504, श्री मंजीत सिंह आचरा जींद 8397995876, श्री रोशन लाल रोहतक 9466057102, श्री मंजीत बेनीवाल, खेड़ी महम, 9813514761, श्री भारत भूषण नरवाना, 9466346931, श्री नीरज कुमार नरवाना, 9518461899, ड़ा राजेन्द्र चौधरी 9416182061, श्री नवीन, भाली रोहतक 9812457498, श्री अजीत सिंह, एवं श्री बिजेंद्र सिंह, उगालन हिसार 9466644394, सुनील कुमार, फतेहाबाद 99913 00108, 9812712984, संजय कुमार, धनाना, भिवानी 9812615026, श्री मंजीत सिंह, खरक रामजी, जींद 9802621306, श्री फूल कुमार, महम 9468245297, श्री अजय दिल्ली 9953318430, श्री राजबीर सिंह लाखनमाजरा 9416516670, श्री रमेश चन्द्र, ज्ञान विज्ञान समिति, हिसार 9812601657.
रिपोर्ट में कोई त्रुटि हो तो दौरे में शामिल किसान
कृपया अवश्य बताएं.
फूल कुमार/ मंजीत सिंह
संयोजक/सह संयोजक
क़ुदरती खेती अभियान